स्वदेश और समाज के उद्धारकर्त्ता—

डा० सनयात सेन

(21)
ब्रह्मवर्चस् शोध संस्थान
शान्ति कुञ्ज, हरिद्वार



श्री सत्यभक्त
पूर्व सम्पादक चाँद, सतयुग, प्रणवीर

युग निर्माण योजना मथुरा

: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

BRAHMVARCHAS SHODH SANSTHAN
SHANTIKUNJ, HARIDWAR, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

स्वदेश और समाज के उद्धारकर्त्ता—

डा० सनयातसेन

सन् १८९६ के अक्टूबर मास में एक दिन लन्दन निवासी अँगरेजों ने बड़े आश्चर्य के साथ सुना कि इङ्गलैण्ड में शरणागत के रूप में आये एक चीन निवासी व्यक्ति का जबर्दस्ती अपहरण कर लिया गया है। उसे चीनी दूतावास में कैद कर रखा है, और मोका लगने पर चीन भेज देने की योजना है। इस रहस्य के प्रकट होने से स्वाधीनता प्रिय अँगरेजों में बड़ी खलबली मची और दो-तीन दिन तक उसी व्यक्ति की चर्चा सर्वत्र सुनाई पड़ती रही। अनेक लोग उसे बन्धन मुक्त कराने के लिये बल प्रयोग अथवा किसी प्रकार की चालाकी से काम निकालने की योजना भी बनाने लगे। जनता की उत्तेजना को देखकर इङ्गलैण्ड के प्रधान मंत्री लार्ड सेलिसबरी ने चीन के राजदूत को संदेश भेजा कि "उस व्यक्ति को इस प्रकार अवैध रीति से बन्द करके बहुत गलत काम किया गया है।" ब्रिटिश सरकार के दबाव से चीनी राजदूत को लाचार होकर उसे छोड़ देना पड़ा।

इस व्यक्ति का नाम सनयातसेन था। वह चीन का एक प्रसिद्ध क्रांतिकारी था और अनेक वर्षों से जापान, हवाई, अमरीका और योरोप के विभिन्न देशों में घूम फिर कर चीन की निरंकुश सरकार के विरुद्ध विद्रोह का प्रचार कर रहा था। वह एक गरीब घर में उत्पन्न और सामान्य शिक्षा प्राप्त व्यक्ति था पर उसने आबादी की दृष्टि से संसार में सर्वप्रधान देश के "महाप्रभु" सम्राट के विरुद्ध बगावत का झण्डा उठाने का साहस किया था। इससे रुष्ट होकर सम्राट ने घोषणा की कि "जो व्यक्ति उसे जीवित या मृत पकड़ कर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

लायेगा उसे दस हजार रुपया पुरस्कार दिया जायगा।" इसलिये धन के कितने ही गुलाम उसके प्राणों के भूखे हो रहे थे और इस कारण वह प्राय: एक मुल्क से दूसरे में छिप कर भ्रमण करता रहता था। जब वह अमरीका से लन्दन के लिये रवाना हुआ तो उस देश में स्थित चीन के राजदूत ने इसकी सूचना तार द्वारा भेज दी थी। लन्दन में सनयातसेन अपने मित्र डा० कैण्टली के यहाँ ठहरे और उस नगर में रहने वाले चीनी लोगों से मिल जुलकर चीन में विद्रोह किये जाने का प्रचार करने लगे। उनको यह पता नहीं था कि उनके पीछे इस दूर देश में भी "शत्रु" के दूत फिर रहे हैं और किसी युक्ति से जाल में फसाने की योजना बना रहे हैं। इन दूतों ने भी चीन निवासी "देशभक्त" होने का बहाना करके सनयातसेन से जान पहिचान करली और एक दिन किसी बहाने से उनको एकान्त स्थान में पकड़ कर चीनी दूतावास में लाकर बन्द कर दिया। वहाँ पर एक अँगरेज नौकर उनको खाना देने आता था। सनयातसेन ने उसको अपनी तरफ मिलाया और उसके द्वारा एक पत्र भेजकर इस घटना की सूचना डा० कैण्टली को देदी। वे तुरन्त ही अपने मित्र के उद्धार के लिये दौड़-धूप करने लगे और इसकी पूरी रिपोर्ट समाचार पत्रों में प्रकाशित करा दी। अभी तक इस रहस्य का पता चीनी राजदूत और उसके दो-चार सहायकों के सिवा किसी को न था। पर समाचार-पत्रों द्वारा ब्रिटिश जनता को सूचना मिल गई कि उनके जनतंत्रवादी देश में किसी निरंकुश सम्राट के अनुचर गुप्त रूप से इस प्रकार कानून और नीति-नियमों की हत्या करके किसी व्यक्ति की स्वाधीनता का अपहरण कर रहे हैं। यह बात उनको बड़ी विचित्र जान पड़ी। उन दिनों इङ्गलैण्ड स्वाधीनता की भूमि के रूप में विख्यात था और मैजिनी, गैरीबाल्डी, कार्लमार्क्स और लेनिन जैसे जगत प्रसिद्ध क्रांति-कारियों को सब देशों से निकाले जाने पर वहीं शरण मिली थी। अँगरेजों को इस प्रकार "स्वाधीनता के अग्रदूत" होने का गर्व था और इसलिये जब उनको मालूम हुआ कि उनकी राजधानी में ही किसी राजनीतिक आन्दोलनकारी को जबर्दस्ती पकड़कर उसके "शत्रुओं" के हाथों सौंपने का षड्यंत्र रचा जा रहा है, जो उसको भयङ्कर से भयङ्कर यंत्रणा देकर मार देंगे, तो उनके रोष का

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

 www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

वारापार न रहा। इङ्गलैण्ड में उस समय भी जनता की आवाज का पूरा आदर किया जाता था। इसलिये जहाँ कुछ लोगों ने समाचार पत्रों में इस अन्याय का निराकरण करने की माँग की और उच्च अधिकारियों को इस प्रकार बेखबर रहने के लिये फटकारा तो सब के कान खड़े हो गये। चीनी राजदूत और उसका अंगरेज सलाहकार तो भौचक्के रह गये कि उनका यह गुप्त भेद किस प्रकार खुल गया। पर उनको जनता के सम्मुख पदावनत होना ही पड़ा और सनयातसेन को छोड़कर उन्होंने अपनी गलती के लिये क्षमा याचना की।

उस समय तो यह मामला दो-तीन दिन में समाप्त हो गया और इसके बाद लोग सनयातसेन को बिल्कुल भूल गये। पर २५ वर्ष बाद २९ दिसम्बर सन् १९११ को ब्रिटिश समाचार एजेंसी "रायटर" के चीन स्थित सम्वाददाता ने समाचार भेजा कि "वही शरणागत व्यक्ति जो अपने देश से भागकर हमारे देश में पहुँचा था और वहाँ भी जिसका पीछा दुश्मनों से न छूटा था, आज चीन के प्रजातंत्र शासन का सर्वप्रथम प्रधान बनाया गया है और इस समय वही उस महादेश का कर्त्ता-धर्त्ता और सूत्रधार है।" यह समाचार पढ़ कर फिर लोग चकित हो गये और प्रश्न करने लगे कि इस बीच में ऐसी क्या बात हो गई कि वह भागा-भागा फिरने वाला और साधनहीन मनुष्य इतने बड़े पद पर पहुंच गया ?

जन्म और बाल्यकाल—

सनयातसेन का जन्म चीन के "क्वानटंग" प्रान्त में सन् १८६६ में हुआ था। उनके पिता "सन टोव्याचान" एक गरीब किसान थे इसलिये इनका बालकपन मामूली ग्रामीण बच्चों की तरह ही व्यतीत हुआ। गाँव की पाठशाला में ही उन्होंने मामूली पढ़ना-लिखना सीख लिया। पर उसी समय वे बाहरी संसार के विषय में दिलचस्पी लेने लगे थे। उनके एक बड़े भाई भी थे जिनका नाम था "सन मो"। वे उस समय अनेक चीनी गरीब लोगों की तरह मजदूरी करने "हवाई द्वीप" में चले गये और वहाँ गन्ने के खेतों में काम करने लगे। यह द्वीप अमरीका वालों के अधिकार में था और वे वहाँ के आर्थिक विकास

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

के लिये बहुत प्रयत्न कर रहे थे। कुछ वर्ष वहाँ मजदूरी करके तथा कुछ धन कमाकर जब "सन मी" घर वापस आया तो "हवाई" की समृद्धि तथा सम्पति के उन्होंने अनेक किस्से सुनाये। उन्होंने "सनयात सेन" को भी उस देश की यात्रा करने के लिये प्रोत्साहित किया। यद्यपि उस समय वे १३ वर्ष के ही थे, तो भी बाहरी संसार का निरीक्षण करने की लालसा से जाने को राजी हो गये और किसी प्रकार सन् १८७९ में चीनी मजदूरों के एक दल के साथ हवाई की राजधानी "होनोलुलु" पहुँच गये।

हवाई पहुँच कर सनयात सेन को अनुभव हुआ कि वहाँ रहने के लिये उनको अँगरेजी भाषा का सीखना आवश्यक है। इसलिये वे ईसाइयों के एक चर्च-स्कूल में भर्ती हो गये। इसके सब शिक्षक अँगरेज थे और विद्यार्थियों को पूरी तरह नियंत्रण में रखकर जीवनोपयोगी शिक्षा देते थे। वहाँ धार्मिक शिक्षा पर बड़ा ध्यान दिया जाता था और सुबह शाम होने वाली 'प्रार्थना' में उपस्थित होना अनिवार्य था। सनयात सेन ने गाने का भी कुछ अभ्यास कर लिया था, इसलिये वे उस स्कूल में अच्छे विद्यार्थी समझे जाते थे।

तीन वर्ष बाद जब वे अपने घर लौट कर आये तो उनके विचारों में बहुत परिवर्तन हो गया था। अब वे अपनी समाज में प्रचलित रूढ़ियों और दासतापूर्ण मनोवृत्ति के विरुद्ध बहुत बातें करने लगे थे और विदेशों की तरह वहाँ नई सभ्यता का प्रचार होना पसन्द करते थे। पर गाँव के मुखिया लोग ऐसी चर्चा को कब पसन्द कर सकते थे, इसलिये उन्होंने सनयात सेन के विरुद्ध "अधार्मिक" का फतवा देकर गाँव से चले जाने का आदेश दे दिया। वे स्वयं भी अब दकियानूसी विचार के लोगों में रहना पसन्द नहीं करते थे, इसलिये वे अपने पिता से पूछकर हांगकांग चले गये और एक स्कूल में विद्याध्ययन करने लगे। वहाँ पर इनका परिचय डा० हेजर से हुआ जो ईसाई चर्च की तरफ से कार्य करने को चीन भेजे गये थे। उनकी संगति के प्रभाव से सनयात सेन को इच्छा डाक्टरी पढ़ने की हुई और कालेज की तीन श्रेणियाँ उत्तीर्ण करके कैण्टन के एक मिशन अस्पताल में चले गये। वहाँ काम सीखने के लिये प्रतिवर्ष बीस डालर फीस देनी पड़ती थी। सनयात सेन के पास इतना पैसा न थ ,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

इसलिये वे अस्पताल का कुछ काम करके अपनी फीस का एक हिस्सा चुका देते थे। छः वर्ष तक मेडिकल कालेज में अध्ययन करने के पश्चात् उनको डाक्टरी की सनद मिल गई।

मेडिकल कालेज में पढ़ते हुये सनयात सेन के क्रांतिकारी विचारों में और भी वृद्धि हो गई। वहाँ इनको "लूहा चंग" और "चेंगशोह" नामक दो मित्र मिल गये जो ऐसे ही विचारों के थे। ये चीन के निरंकुश सम्राट का तख्ता उलटना चाहते थे और आपस में इसके लिये तरह-तरह की योजना बनाया करते थे इस उद्देश्य से सनयात सेन और लूहा चंग ने उत्तरी चीन की यात्रा की और फिर पेकिङ्ग में घूम फिर कर राजवंश की स्थिति और शक्ति का पता लगाया। उन्हें मालूम हुआ कि राजा और उसके अधिकारियों के भ्रष्टाचार और अन्यायों के कारण प्रजा में असंतोष तो बहुत है पर मानसिक दासता के बन्धनों में बँधे रहने के कारण वह किंकर्तव्य विमूढ़ हो रही है। उसकी ठीक वही दशा थी जैसी भारतवर्ष में देशी राजाओं की प्रजा की। यहाँ के अधिकांश राजा अयोग्य थे और अपने भोग-विलास के लिये प्रजा का शोषण करने में उनको जरा भी संकोच नहीं होता था। उनके शासन में किसी की सम्पति और इज्जत सुरक्षित नहीं थी, चाहे जब किसी को लूटमार सकते थे। फिर भी प्रजा उनको "सर्वशक्तिमान भगवान" का अंश समझ कर पूजती ही रहती थी और अपने भाग्य को दोष देकर सब प्रकार के अन्याय, अपमान, कष्टों को चुपचाप सहन करती रहती थी। यही हाल चीन की जनता का था। उसे परम्परा और पूर्वजों की भक्ति के नाम पर ऐसा अन्ध-विश्वासी बना दिया गया था कि राजा और उसके प्रधान अधिकारियों के विरुद्ध वह न तो कुछ सोच सकती थी और न कर सकती थी।

सनयात सेन और उसके मित्रों ने इस स्थिति को अच्छी तरह सोच-समझ कर निश्चय किया कि जब तक चीन में किसी प्रकार की क्रांति करके लोगों का मार्गदर्शन न किया जायगा तब तक उनमें जागृति न होगी और न वे अन्यायी शासकों के विरुद्ध खड़े हो सकेंगे। पर इस कार्य के लिये अस्त्र-शस्त्र की आवश्यकता थी जो बिना रुपयों के प्राप्त नहीं हो सकते थे। इसलिये इनकी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

निगाह फिर हवाई द्वीप की तरफ गई और वहाँ जाकर इन्होंने "उन्नतिशील चीनी समाज" नामक समिति की स्थापना की। इसका उद्देश्य उन चीन निवासियों को संगठित करना था जो अपने देश की उन्नति की आकांक्षा रखते थे।

उसी समय चीन और जापान में युद्ध छिड़ गया और चीन की हार पर हार होने लगी। सनयातसेन का विचार था चीन सरकार के हारने पर ही वहाँ पर क्रांति हो सकना संभव होगा। चीन की सेना के निकम्मेपन को देख कर उनको विश्वास हो गया कि यदि सुदृढ़ विचारों के थोड़े लोग भी क्रांति का झण्डा उठा दें और जनता को संगठित करके शासकों के खिलाफ खड़े हो जायें तो वह सेना उनका कुछ न कर सकेगी। यह सोच कर वे बड़े परिश्रम से जगह-जगह समिति की शाखाएँ खोलने लगे। उसी समय शङ्घाई से उनके चीन निवासी मित्रों का पत्र आया कि "क्रांति के लिये आपका आना आवश्यक है, चीन हार रहा है।"

वे हवाई से कुछ मित्रों को लेकर चीन आगये। उस समय युद्ध समाप्त हो गया था। चीन ने जापान से हार मानकर फारमोसा को छोड़ दिया था और कोरिया को स्वतन्त्रता स्वीकार कर ली थी। सनयात सेन ने इस सन्धि को बहुत अपमानपूर्ण समझा और अपने साथियों की राय से निश्चित किया कि शीघ्र ही तैयारी करके विभिन्न प्रान्तों में विशेष कर "कैण्टन" में सरकार पर हमला कर दिया जाय।

इस उद्देश्य के लिये पर्याप्त धन एकत्रित करके हथियार मँगाने का प्रयत्न किया गया और बहुत-सी रायफलें और पिस्तौलें खरीदी गईं। पर जब उनको कैण्टन के बन्दरगाह पर लाकर उतारा जाने लगा तो भेद खुल गया और पुलिस ने ६०० पिस्तौलें बरामद कर लीं। उसी समय क्रांतिकारियों के मुख्य कार्यालय पर भी धावा किया गया, जहाँ १७ आदमी पकड़े गये। इनमें से तीन को फाँसी देदी गई। यह घटना सन् १८९५ की है।

पर सनयात सेन उनके हाथ नहीं आये। वे वेष बदल कर बच निकले और हांगकांग में अपने मित्र डा० कैण्टली के पास जा पहुँचे। पर वहाँ भी वे

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org
शान्ति कुञ्ज, हरिद्वार

सुरक्षित नहीं रह सकते हैं। अँगरेजों के अधिकार में होने पर भी वह चीन का ही एक भाग है और वहाँ के अधिकाँश निवासी चीनी ही हैं। उसी समय चीन सरकार की तरफ से उनकी गिरफ्तारी के लिये पुरस्कार की घोषणा करदी गई थी। इसलिये वे कुछ मित्रों की सहायता से "काबी" नामक छोटे स्थान को चले गये। वहाँ उन्होंने अपने लिये जापानी पोशाक तैयार कराई और अपने बालों को भी उसी ढङ्ग पर कटवाया। अब वे अपटूडेट जापानी दिखाई पड़ने लगे, जिनको पहचान सकना कठिन था।

"काबी" से वे हवाई टापू को रवाना हो गये और वहाँ छः महीने तक रहे। वहाँ से अमरीका गये और तीन-चार महीने अमरीका प्रवासी चीनियों में घूम-फिर कर उनमें क्रांति की भावना भरते रहे। वहाँ से इङ्गलैण्ड गये जहाँ अक्टूबर १८९६ में उनको धोखे से गिरफ्तार किये जाने की घटना हुई, जिसकी चर्चा आरम्भ में की जा चुकी है।

सन् १८९६ से १८९८ तक वे योरोप के विभिन्न देशों में भ्रमण करते रहे। यह समय उनके लिये बहुत कष्टकारक था। उनके मित्र उनको जो थोड़ी-बहुत सहायता करते थे, उसी से किसी प्रकार वे अपना निर्वाह करते थे, चाहे कभी पेट भर खाना मिल जाय अथवा आधे पेट ही रह जाना पड़े। पर इस बीच में इन्होंने राजनीतिक साहित्य का खूब अध्ययन किया। कार्ल मार्क्स के ग्रंथों को पढ़कर वे कट्टर साम्यवादी बन गये और जीवन के अन्त तक उसी मत का प्रचार करते रहे। इससे उनको संसार की राजनीतिक अवस्था और क्रांतिकारी कार्यक्रम के लिये आवश्यक बातों का ज्ञान हो गया। पर उस समय चीन की दशा इतनी गिरी हुई थी और वहाँ ऐसी अन्धेरगर्दी चल रही थी कि शीघ्र ही किसी सुधार की आशा दुराशामात्र थी। सबसे पहली कठिनाई तो उस देश का महान विस्तार ही थी। उस समय चीन का राज्य समस्त योरोप से भी बड़ा था। यों भी कह सकते हैं कि संसार में रहने लायक जितनी जमीन है उसका चौथाई भाग चीन के अधिकार में था। दूसरी बात यह है कि चीन निवासी घोर दकियानूसी थे। इस सम्बन्ध में कुछ लोग कहते

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

करते थे कि "पाश्चात्य देशों के लोग दस वर्ष में जितना आगे बढ़ते हैं, चीन वाले उससे कम सौ वर्ष में आगे खिसकते हैं।"

वे लोग हजारों वर्षों से संसार से पृथक रहकर अपने ही कार्य-क्रमों और रहन-सहन में संलग्न रहे। पश्चिमी देश कितनी तरक्की कर रहे हैं अथवा अपना विस्तार करते जाते हैं इसका उनको कोई पता न था। एक मुर्दा भाषा के ग्रन्थों को वे रट लेते थे और समझते थे कि हमीं संसार भर में सबसे अधिक ज्ञानी हैं। उनका देश अनेक प्रकार की नैसर्गिक सम्पदाओं और साधनों से भरा पड़ा था, पर उन्होंने कभी उससे उद्योग-धन्धों के स्थापित करने की बात नहीं सोची। एक जर्मन विद्वान ने बताया था कि चीन के एक प्रांत में इतना कोयला है कि वह संसार भर के लिये एक हजार वर्ष तक काम दे सकता है। पर उस कोयले को निकालने वाला कोई नहीं है। चीन में जो सबसे पहली रेलवे लाइन बनाई गई उसे सरकार ने शीघ्र ही खरीद लिया और पटरियों को उखाड़ डाला तथा इंजिन को नदी में डुबा दिया। कारण यही था कि वहाँ के अधिकारी अपने देश में कोई ऐसी बात प्रचलित होने देना नहीं चाहते थे जिससे लोगों में नये विचार और जागृति के भाव उत्पन्न हों।

सनयात सेन ने स्वयं चीन की दशा का चित्रण करते हुये एक स्थान पर कहा है—"राजनीति की पुस्तकों को छापने और रखने की चीन में आज्ञा नहीं है। दैनिक पत्रों की मनाही है। संसार तथा उसमें रहने वाले लोगों और राजनीति की गन्ध भी वहाँ नहीं पहुंची है। सातवें दर्जे के "मन्दारिन" (सरकारी अधिकारी) के नीचे किसी को चीन का भूगोल पढ़ने की आज्ञा नहीं है, विदेशों का भूगोल पढ़ना तो बहुत दूर की बात है। वर्तमान राज वंश के कानून सब लोग नहीं पढ़ सकते। वे केवल उच्च पदाधिकारियों को ही ज्ञात है। सामयिक पुस्तकों को पढ़ने की केवल मनाही नहीं है वरन् उसकी सजा प्राणदण्ड है। किसी को कोई नया आविष्कार करने की आज्ञा नहीं है। इस आज्ञा का उल्लंघन करने वालों को फांसी तक दी जा सकती है। इस तरह लोग अन्धकार में रखे जाते हैं और जिन बातों को सरकार अपने सुभीते की समझती हैं केवल उन्हीं को प्रकट होने देती है।"

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org



आध्यात्मिकता का झूंठा अहंकार—

चीन की प्रजा के इस प्रकार अन्धकार में रहने और सब तरह के अन्यायों को सहते रहने का एक और भी कारण था और शायद पाठकों को यह जानकर आश्चर्य होगा कि वह हमारे देश की स्थिति से बिल्कुल मिलता-जुलता था। वह कारण था आध्यात्मिकता और प्राचीन सभ्यता का गलत अहंकार। यद्यपि उस समय चीन की दशा अत्यन्त शोचनीय हो रही थी, वहाँ के सभी श्रेणियों के लोगों में तरह-तरह के दोष भरे हुये थे और वे संसार में "अफीमची" के नाम से विख्यात् थे, पर अपने मन में और अपने घर के भीतर वे अपने को संसार की सर्वश्रेष्ठ जाति, सर्वोत्कृष्ट मनुष्य समझते थे। इसका वर्णन करते हुये 'महापुरुष सनयात सेन' नामक निबन्ध में कहा गया है—

"इसका कारण यह था कि बहुत समय से चीन को आध्यात्मिक अहङ्कार का लकवा मार गया था और उसी अहङ्कार की बेड़ियाँ उसे अब तक जकड़े हुये थीं। जिस समय योरोप के लोग निरे जङ्गली थे, उस समय चीन के लोग बड़े-बड़े मकान बनाना जानते थे। वहाँ बड़े-बड़े ज्योतिषी मौजूद थे। वे लोग बन्दूक चलाना जानते थे, बारूद बना लेते थे, मिट्टी के बर्तन, सरेस, तांत आदि अनेक पदार्थ बनाना जान गये थे। उन्होंने छापने की कला का आविष्कार किया था और योरोप वालों ने उसके पाँच सौ वर्ष बाद उसका हाल सुनकर अपने यहाँ मुद्रण कला का प्रचलन किया। चीन वालों ने १२०० मील लम्बी किलेवन्दी की अभेद्य दीवार, ६०० मील लम्बी एक नहर और रोमन लोगों की सी पहाड़ी सड़कें भी बहुत पहले बना डाली थीं।

"इसलिये कोई आश्चर्य की बात नहीं कि उन्हें अपनी इस प्रकार की उन्नति पर और विशेष कर ऐसे समय में जब कि सभ्यता और प्रगति में उनका मुकाबला करने वाला उसके पड़ोसी भारत के अतिरिक्त और कोई न था, यह ख्याल पैदा हो गया हो कि संसार की सारी जातियाँ जङ्गली हैं और केवल हमारी जाति ही श्रेष्ठ कहलाने योग्य है। यदि हमारी जाति नष्ट हो जाय तो संसार का समस्त ज्ञान भंडार भी लुप्त हो जायगा।"

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

इस झूँठे अहङ्कार का नतीजा यह हुआ कि चीन दिन पर दिन प्रगति के मैदान में पिछड़ने लगा और उन्नीसवीं शताब्दी में अधिकांश योरोपियन देश उससे आगे निकल गये। पर उसका घमण्ड और अपनी श्रेष्ठता का गुमान ज्यों का त्यों बना रहा। इसका एक हास्यास्पद नमूना उस समय देखने को मिला जिस समय ब्रिटिश पार्लीमेण्ट की आज्ञा से लार्ड नेपियर इसलिये कैंटन आये कि इङ्गलैण्ड और चीन के बीच व्यापार की वृद्धि की जाय और उसकी शर्तें तय करली जायें। इस पर वहाँ के चीनी गवनर ने लार्ड नेपियर के पत्र का उत्तर में कहा—"मैं ऐसे जङ्गली जाति वालों से पत्र-व्यवहार भी नहीं करना चाहता। ऐसा करना हमारी शान के खिलाफ होगा। जङ्गली कौम के लोग आयें-जायें और सिवाय व्यापार के उन्हें किसी दूसरी बात से सरोकार न रहे। चीन के अधिकारी व्यापार ऐसी तुच्छ बात की तरफ ध्यान भी नहीं देते, ऐसी छोटी-छोटी बातों का विचार करना भी हमारे लिये अनुचित है।"

पाठक इन बातों को पढ़ें और अपने देश की हालत पर विचार करें कि हम लोगों के दिमाग भी क्या इसी प्रकार की विचित्र बातों से नहीं भरे पड़े हैं? हम वैदिककालीन सच्चे अध्यात्म की चर्चा नहीं करते, जब भारतियों ने जल-थल के कठिन से कठिन मार्गों से चलकर संसार के दूर देशों की यात्रा की, वहाँ के निवासियों को सभ्यता और ज्ञान का पाठ पढ़ाया तथा अपने देश को भी अधिक से अधिक साधन सम्पन्न बनाया। पर मध्ययुग में हमारे यहाँ जो विचारधारा फैली वह यही थी कि हम बड़े धर्मात्मा, ज्ञानी, विद्वान् और सभ्य हैं तथा अन्य देशों में प्रायः म्लेच्छ, यवन, दैत्य, व्रात्य, बर्बर आदि निम्न-कोटि के मनुष्य भरे पड़े है। तभी से हमारे ऊपर विदेशियों के आक्रमण होने लगे और यूनानी, हूण, शक, सीथियन, तातार, पठान आदि अनेक जातियों ने भारतवर्ष के अनेक भागों को ध्वस्त किया, लूटा और आधीन भी बनाया, पर हम सदा यही कहते रहे कि "ये सब असभ्य, राक्षस, तामसी, पापी हैं और ज्ञानी, ध्यानी, तपस्वी, सतोगुणी, त्यागी, पुण्यात्मा तो केवल हमीं है!" जब पोर्तुगाल और इङ्गलैण्ड वालों ने व्यापारी के रूप में आकर अपने कदम इस देश में जमाये तब हमने भी यही कहा कि "इस प्रकार बेचने-खोचने के लिये

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हजारों कोस तक मारे-मारे फिरना तो छोटे लोगों का काम है, हमको इस तरफ ध्यान देने की कोई आवश्कता नहीं।" यह कोई काल्पनिक विचार नही है, सुप्रसिद्ध पर्यटक अलबरूनी ने भारतवर्ष की तत्कालीन स्थिति का अध्ययन और विवेचन करके यही निष्कर्ष निकाला था। उसने लिखा है—

"हिन्दू लोग समझते हैं कि उनके जैसा दूसरा देश नहीं है, उनके राजाओं जैसा दूसरा राजा नहीं है, उनके धर्म जैसा दूसरा धर्म नहीं है, उनके शास्त्रों जैसा दूसरा शास्त्र नहीं है। यदि तुम खुरासान और ईरान के शास्त्रों तथा विद्वानों के सम्बन्ध में उनसे बात करोगे तो वे तुमको मूर्ख ही नहीं मिथ्यावादी भी समझेंगे। वे यदि प्रवास करें, दूसरों से मिलें-जुलें तो उनकी यह प्रवृत्ति नहीं रहेगी—कारण, उनके पूर्वज ऐसे संकुचित नहीं थे।"

इतना ही नहीं जब मुसलमानों और उसके बाद अंगरेजों ने इस देश पर अधिकार जमा लिया और हमको अपने आधीन बना कर हर तरह से प्रताड़ित, अपमानित और लांछित किया तब भी हमारी वह मोह-निद्रा भङ्ग नहीं हुई। तब भी हम अपने को धर्मात्मा और उनको म्लेच्छ कहते रहे। पुराने युग की बात छोड़ दीजिये वर्तमान युग में हमने अपनी आँखों से देखा है कि राजाओं और पंडितों से लेकर सामान्य जन तक अँगरेजों को 'हजूर'-'हजूर' कहते हुये अपना गला सुखाते रहते थे और उनकी थोड़ी-सी कृपा पाकर भी अपने को धन्य समझते थे, पर अपने घर में अथवा सभा-समाजों में बैठ कर यही कहते थे कि हम "ऋषियों और चक्रवर्ती नरेशों" के वंशज हैं और ये तो टापुओं के रहने वाले "धर्महीन और पाप कर्म करने वाले" हैं। जिस समय हम दर्शन और शास्त्रों का मनन करके जीव और ब्रह्म की एकता का प्रतिपादन करते थे, रत्नजड़ित भवनों में निवास करते थे उस समय ये लोग रङ्ग-बिरङ्गी मिट्टी से अपने शरीरों को पोत कर जङ्गलों में घूमते थे। पर अन्त में उन्हीं के कदमों में बैठकर आधुनिक शिक्षा प्राप्त करने वालों ने देश का उद्धार किया और वेद तथा शास्त्रों के अभिमानी "पंडित" उस समय भी कापुरुष की तरह दूर रह कर व्यर्थ में ही गाल बजाते रहे।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

भ्रष्टाचार का बोलबाला—

इस प्रकार देश का विस्तार और लोगों में प्रचलित भ्रमपूर्ण घटनाओं के अतिरिक्त सनयात सेन के मार्ग में तीसरी बड़ी बाधा उस देश में फैला हुआ महा भ्रष्टाचार और सरकारी अधिकारियों का अन्धेर-खाता था। चीन का सम्राट "मंचू" वंश का था जिसे चीन के मुख्य निवासी विदेशी मानते थे। सम्राट ने शासन सम्बन्धी सब कार्य 'मंचू' वंश वालों को ही दे रखा था और वे सब परस्पर मिले-जुले होने के कारण प्रजा के साथ मनमाना व्यवहार करते थे। चीन की हकूमत में छोटे से चौकीदार या चपरासी से लेकर गवर्नर तक यही चाहते थे कि वर्तमान अन्धेरखाता जैसा है वैसा ही चलता रहे और जनता में किसी प्रकार के नये विचारों या कार्यों का प्रचार न हो सके। वहाँ के अधिकारियों को वेतन बहुत कम मिलता था और तमाम खर्च "ऊपरी आमदनी" से ही चलता था। इस सम्बन्ध में सनयात सेन ने इङ्गलैण्ड में रहते हुये लिखा था कि "शायद अँगरेज लोगों को इस बात का पता नहीं कि चीन में बड़े-बड़े पदाधिकारियों का निश्चित वेतन कितना कम होता है। उन्हें विश्वास नहीं होगा कि कैण्टन प्रान्त के वाइसराय का वार्षिक वेतन ६० पौण्ड है, अर्थात् वह प्रतिमास ५ पौण्ड (अथवा ७५ रुपया) पाता है। जिस वायसराय की प्रजा संख्या की दृष्टि से समस्त इङ्गलैंड की जनसंख्या से अधिक हो, उसकी तनखाह इतनी कम होना क्या आश्चर्य की बात नहीं है? इससे आप समझ सकते हैं कि अपने पद की योग्यतानुसार ठाट-बाट से रहने और दौलत जमा करने के लिये वह कौन-सा अन्याय न करता होगा? उसे मजबूरन लोगों पर अत्याचार करना पड़ता है और न्याय को बेचना पड़ता है।

सरकारी दृष्टि में ऊँचा बनने के लिये शिक्षा की परीक्षाओं में अच्छी तरह उत्तीर्ण होना एक साधन है। मान लीजिये एक विद्यार्थी विशेष योग्यता के साथ पास होता है, वह सरकारी नौकरी की खोज करता है और "पेकिङ्ग" (चीन की राजधानी) के अधिकारियों को घूस देकर एक जगह प्राप्त करता है। परन्तु उसकी तनखाह से उसका गुजारा नहीं होता। क्योंकि

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

तनखाह के बराबर रुपया तो उसे प्रतिवर्ष अपने अधिकारियों को दे देना पड़ता है, ताकि वह अपने स्थान पर बना रहे। परिणाम यह होता है कि वह लूट-खसोट प्रारम्भ करता है। जब गवर्नमेण्ट उसकी पीठ पर हाथ रखे है, यदि तब भी वह काफी रुपया न कमावे, तो उससे बढ़कर बेवकूफ कौन होगा ? वह खूब रुपया कमाता है और अच्छी तरह घूस देकर ऊँचे पद प्राप्त करता चला जाता है। ज्यों-ज्यों वह ऊँचे पद प्राप्त करता जाता है, त्यों त्यों उसे धन कमाने में सुविधा होती जाती है। इस प्रकार जो मनुष्य खूब अच्छी तरह से लूट सकता है वही सबसे ऊँचा पद पाता है।"

जासूसों का जाल—

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

बहुत से लोग यह भी प्रश्न करते हैं कि 'जब चीन में ऐसा अन्धेर खाता फैल रहा था तो क्या वहाँ के समझदार और न्याय-प्रेमी व्यक्तियों के पास ऐसा कोई साधन न था जिससे वे संगठित होकर इस अन्याय को मिटाने का प्रयत्न करते ? यह कैसे सम्भव हुआ कि एक वंश के लोग इतने विशाल देश को अपनी शक्ति से काबू में रख सके ?' इसके उत्तर में इतना ही जान लेना पर्याप्त है कि मंचू-शासक चीन निवासियों को डराकर और उनका भेद लेकर ही अपना काम चलाते थे। सरकारी जासूस बड़े शहरों से लेकर छोटे गाँवों तक फैले थे। कारखानों में, होटलों में, रेलगाड़ियों में, निजी घरों तक में जासूस फैले हुये थे और प्रत्येक घटना की जानकारी अधिकारियों को देते रहते थे। वे प्रत्येक बात का तुरन्त पता लगा लेते थे पर ऐसी गुप्त रीति से कि किसी को ज़रा भी सन्देह न हो। इन जासूसों के लिये कोई काम असम्भव न था। वे अपने घनिष्ठ मित्रों का भी भेद सरकार को बतला देते थे। किसी काम पर पश्चात्ताप करना तो उनके लिये संभव ही न था। चीन के किसी भी गाँव में कोई भी नया आदमी आया कि उसकी खबर तुरन्त अधिकारियों के के पास पहुँचा दी जाती थी। किसी भी व्यक्ति के मुँह से सरकार के विरोध में या क्रांति के पक्ष में एक भी शब्द निकल जाय तो उसकी आफत आ जाती थी। ये जासूस सम्राट के महलों तक में मौजूद रहते थे और वहाँ भी अगर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

कोई "सुधारों" की बात करता था तो उसको भी काल-कोठरी में या निर्वासन अवस्था में ही जीवन व्यतीत करना पड़ता था ।

बक्सर-विद्रोह—

पर ऐसा अन्यायी और भ्रष्टाचारी शासन सदैव एक गति से नहीं चल सकता । जब अन्याय का पलड़ा बहुत भारी हो जाता है तो दूसरी तरफ से कोई न कोई प्रतिक्रिया होती ही है । यदि उस देश को प्रजा भय से गूँगी और अपङ्ग हो जाती है तो प्रकृति और किसी उपाय से उसको बदला चुकाने की योजना बनाती है । चीन सरकार तो अपने देश के आर्थिक विकास के लिये कुछ कर नहीं रही थी, पर अन्य देशों को उस देश के असीम साधनों तथा इतनी बड़ी जन-शक्ति को देखकर लालच लग रहा था । उन्होंने चीन सरकार को तरह-तरह से समझा-बुझा कर उससे अपने लिये कितनी ही रियायतें प्राप्त करलीं । रूस ने साइबेरियन रेलवे के लिये मंजूरी लेली, फ्रांस हांकाऊ तक ट्रंक लाइन बनाने की तैयारी कर रहा था, जर्मनी को शनटुङ्ग रेलवे का अधिकार मिल गया था और खानों की व्यवस्था भी उसके हाथ में थी । देश में विदेशियों की इस प्रकार की घुस-पैठ कितने ही परम्परावादी राजनेताओं को भी खटकती थी । कुछ लोग विदेशियों से इसलिये अप्रसन्न थे कि इन लोगों ने अपने धर्म का प्रचार भी आरम्भ कर दिया था । इनके पादरी सामान्य जनता को अनेक प्रकार के प्रलोभन देकर धर्म-परिवर्तन करने के लिये प्रेरित करते थे । साथ ही जो लोग ईसाई हो जाते थे उनकी सभी उचित-अनुचित बातों में ये सहायता करने लगते थे । ये बातें सभी श्रेणियों के देश-भक्तों और देशाभिमानी व्यक्तियों को अनुचित जान पड़ती थीं । इस कारण सन् १९०० में कितने ही दलों ने मिलकर विदेशियों के विरुद्ध एक अभियान खड़ा कर दिया जिसका इतिहास में 'बाक्सर-विद्रोह' के नाम से उल्लेख किया गया है । उन लोगों ने कितने ही पादरियों को मार डाला और विदेशी दूतावासों को घेर कर मारने की धमकी देने लगे । वह तो चीन की साम्राज्ञी थे, जिसका शासन में बड़ा प्रभाव था, विद्रोहियों को ऐसा करने से रोका

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

और सब प्रकार से कोशिश की, तब जाकर राजदूतों की जान बची।

इसके कुछ ही समय बाद आठ देशों की सम्मिलित सेनाऐं अपने देशों के नागरिकों तथा राजदूतों की रक्षार्थ वहाँ आ पहुँची और उन्होंने 'बाक्सर-विद्रोह' को पूरी शक्ति से कुचल दिया। बाक्सरों में अधिकांश पुराने ढङ्ग के योद्धा थे जो तलवारों से लड़ते थे। योरोपियन सेनाओं की रायफलों के आगे शीघ्र ही उनको भागना पड़ा। इस युद्ध में अँगरेजों की तरफ से भारतीय सेना भी चीन में लड़ने गई थी। चीन के शासकों को हर तरह से हार मानकर और खुशामद करके अपनी रक्षा करनी पड़ी। फिर भी आक्रमणकारी देशों ने उस पर ३ अरब डालर का जुर्माना ठोक दिया और जब तक वह अदा न हो तब तक कुछ बन्दरगाह आदि पर पूरा या आंशिक अधिकार कर लिया। चीन कभी उस जुर्माने की रकम को न चुका सका क्योंकि अव्यवस्था और भ्रष्टाचार के कारण राष्ट्र का खजाना सदा खाली ही रहता था। इस कारण वहाँ विदेशियों का प्रभाव बराबर बढ़ता ही चला गया। चाहे पारस्परिक प्रतिस्पर्धा के कारण उनमें से कोई चीन पर अपना शासन तो कायम न कर सका पर व्यापार और उद्योग-धन्धों के विकास के नाम पर उन्होंने देश को काफी लूटा-खसोटा। विदेशियों की इसी स्वार्थ-साधन की नीति को देखकर चीन के नवयुवकों में राजनीतिक जागृति उत्पन्न हुई और वे सनयात सेन के नेतृत्व में निरन्तर अपने देश के उद्धार के लिये प्रयत्न करने लगे।

इस सम्बन्ध में एक मजेदार बात यह थी कि यद्यपि चीन सरकार की इस घटना में बहुत अधिक छीछालेदर हुई और उसको पश्चिमी देशों के सम्मुख घुटने टेक कर आत्म-रक्षा की भीख माँगनी पड़ी, पर बाद में जब चीन में इस युद्ध का वर्णन रिपोर्ट और पुस्तकों के रूप में लिखा गया तो उसमें यही बतलाया गया कि "विदेशी लोग व्यापार और निर्वाह के लिये चीन आये और परम दयालु सम्राट तथा राजमाता ने कृपा करके उनको उपयुक्त धन तथा भूमि प्रदान करके उनका पालन-पोषण किया।" इस घटना पर से हमको हाल ही में सन् १९६५ वाले पाकिस्तान-भारत युद्ध की याद आती है, जब भारतीय सेनाओं ने हर प्रकार हारने और लाहौर तक अधिकार जमा लेने पर भी वह अपने

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

देश में यही प्रचार करता रहा कि हमने भारतीय सेनाओं को खूब मारा है और उसे जगह-जगह से भगाकर वहाँ के अनेक नगरों पर कब्जा कर लिया है। युद्ध समाप्त हो जाने पर भी वहाँ की सरकार और समाचार-पत्र ऐसी ही डींगें मारते रहे। इस प्रत्यक्ष आत्म-प्रवंचना की कोई हद है!

चीन की गुप्त सभाएँ—

बाक्सर विद्रोह के प्रसङ्ग में चीन की गुप्त सभाओं का वर्णन भी भी आवश्यक जान पड़ता है, क्योंकि बाक्सर-आन्दोलन और बाद में चीन की हार के फल: स्वरूप सनयात सेन के स्वतंत्रता-आन्दोलन की प्रगति का बहुत कुछ श्रेय इन गुप्त सभाओं को भी था। बाक्सरों की सेना में बहुत से व्यक्ति इन्हीं गुप्त सभाओं के थे। इतना अन्तर अवश्य था कि गुप्त सभाओं के रूप में ये लोग व्यक्तिगत अथवा छोटी-मोटी स्थानीय समस्याओं के लिये कार्य करते थे और बाक्सर-आन्दोलन राष्ट्रीय दृष्टिकोण से आरम्भ किया गया था।

इस प्रकार की गुप्त सभाएँ चीन में बहुत वर्षों से कायम थीं और प्रत्येक बड़े गाँव या कस्बे में एकाध सभा अवश्य पाई जाती थी। बड़े-बड़े नगरों में तो छै-सात सभायें भी थीं। इन सभाओं का मुख्य उद्देश्य सभासदों में संगठन, मित्रता और पारस्परिक सहायता पहुँचाने का था। पर विशेष परिस्थिति में वे राजनीति के मामलों में भी भाग लेने लगती थीं। जिस प्रकार प्रत्येक आन्दोलन या संगठन में अच्छे-बुरे दोनों प्रकार के व्यक्ति पाये जाते हैं, वही स्थिति इन गुप्त-सभाओं में थी। इनके कितने ही नासमझ सदस्य कभी ऐसे काम कर बैठते थे जिससे सभा की बदनामी हो जाती थी और उसकी प्रगति रुक जाती थी। परन्तु जिन सभाओं के नेता देश-भक्ति और समाजोन्नति की दृष्टि से कार्य करते थे वे बहुत समय तक स्थिर रहकर उपयोगी सेवा करती रहीं।

इन सभाओं के मुखिया को चीनी भाषा में "थाकू" कहते थे। जो कोई सभा में सम्मिलित होना चाहता पहले अपना प्रार्थना-पत्र "थाकू" के पास ही भेजता था। वह सब सदस्यों को इसकी सूचना देकर किसी मंदिर में सभा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

करता। रात के समय जब सब इकट्ठे हो जाते तो वह एक संक्षिप्त भाषण करके नये व्यक्ति का परिचय कराता। तब वह व्यक्ति सभा के सामने खड़ा होकर मुट्ठी बन्द करके तीन बार प्रणाम करता। इसको चीनी भाषा में "थाटिआ" कहते हैं। इसके उत्तर में सब सदस्य खड़े होकर 'थाटिओ" कहते हैं। इसके पश्चात् वे एक-दूसरे से 'चीनचा"-"चीनचा" कहते। इसका आशय था कि आप बैठ जायें। चीन में दूसरों के बैठने के पहले अपनी जगह बैठ जाने को सभ्यता के विपरीत माना जाता है। इस तरह "चीनचा"—"चीनचा" कहते-कहते दस-पाँच मिनिट गुजर जाते। इस शब्द को कहकर प्रत्येक व्यक्ति थोड़ा झुकता जाता और दूसरों को देखता जाता कि वे भी झुक रहे हैं या नहीं। अन्त में जब सब बैठ जाते तो "थाकू" नये सभासद को चीनी हुक्का देता। उसके एक हाथ में हुक्का रहता और दूसरे में कागज की बत्ती, जिससे हुक्के को पिया जाता है। हुक्का पी लेने पर "थाकू" एक पुस्तक में से सभा के नियम-उपनियम पढ़ने लगता, जिन्हें नये सदस्य को पूरी तरह स्वीकार करना होता था। इन नियमों का स्वरूप बहुत कुछ इस प्रकार का होता था—

(१) आज से मैं इस भ्रातृ-भाव की सभा का सभासद होता हूँ।

(२) मैं गम्भीरता के साथ सच्चे हृदय से प्रतिज्ञा करता हूँ कि मैं सभा का कोई रहस्य प्रकाशित नहीं करूँगा। यदि मैं ऐसा करूँ तो "थाकू" को जो इच्छा हो वही दण्ड मुझे दे।

(३) आज से मैं सभा के प्रत्येक सभासद को उसकी उम्र, विद्या और दर्जे के अनुसार अपना बड़ा या छोटा भाई समझूंगा।

(४) आज से मैं "थाकू" को अपना सबसे बड़ा भाई समझूंगा और उसे अपना आध्यात्मिक पथ-प्रदर्शक भी मानूंगा। मैं प्रण करता हूँ कि उसकी आज्ञा का पूर्णतः पालन करूंगा और उसके आदेशानुसार कार्य करूंगा।

(५) जिस समय सभा किसी सभासद को आर्थिक या शारीरिक सहायता की आवश्यकता होगी उस समय मैं उसकी सहायता करने का प्रयत्न करूंगा। इस प्रकार की सहायता देने में यदि मुझे अपने प्राण भी देने पड़ेंगे तो भी मैं कुछ संकोच न करूंगा।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

(६) यदि किसी सभासद पर अदालत में कोई सच्चा या झूठा मुकदमा चलेगा तो मैं अपनी सामर्थ्य भर उसे छुड़ाने का प्रयत्न करूँगा। या तो मैं स्वयं उसका गवाह बन जाऊँगा या दूसरों को उसका गवाह बनने के लिये प्रेरित करूँगा।

(७) मैं गम्भीरता के साथ प्रण करता हूँ कि मैं देश के शत्रुओं का जड़-मूल से सफाया करने का प्रयत्न करूँगा। चाहे यह कार्य मुझे अकेले करना पड़े या अन्य सदस्यों के साथ मिलकर।

(८) यदि अपना कर्तव्य पालन करने में किसी सभासद की मृत्यु हो जाय तो मैं तन-मन-धन से उसके परिवार की सहायता करूँगा।

(९) यदि मेरे सामने किसी सभासद पर कोई अन्य व्यक्त आक्रमण करेगा तो मैं तुरन्त उस शत्रु के मुकाबले में अपने भाई का साथ दूँगा। अगर आवश्यक होता तो उसका सिर काट लूँगा।

(१०) यदि कोई मुझ पर या सभा के किसी सभासद पर चोट करेगा तो जब तक उसका पूरी तरह बदला न ले लूँगा तब तक मैं चैन से न बैठूँगा।

(११) यदि सभा के नियमों के अनुसार मैं अपना कर्तव्य पालन न करूँ तो "थाकू" और अन्य सभासद मुझे मुन सिब सजा दें।

फिर ये सब बातें एक कागज पर लिखकर उसे जला दिया जाता और उसकी राख एक शराब जैसे पेय पदार्थ के प्याले में डाल दी जाती। नया सभासद अपने वचनों के प्रमाण स्वरूप उसे पी जाता। अपनी सचाई के प्रमाणस्वरूप वह दूसरा कार्य यह करता कि अपनी उँगली को एक सुई से छेदता और उसमें से दस-बीस बूँद खून निकाल कर चाय में मिला देता। उस चाय को वह तथा अन्य सब सदस्य मिलकर पीते।

इसके पश्चात् अंतिम परीक्षा की बारी आती। तीन-चार बहुत भारी तलवारें जो भुजाओं की आकृति की होती थीं बहुत महीन डोरों से लटका दी जातीं, और नये सदस्य को उनके नीचे इस प्रकार खड़ा कर दिया जाता जिससे उनकी नोकें उसकी गर्दन से छूती रहतीं। "थाकू" एक मुट्ठी चावल

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

लेकर कुछ मंत्र पढ़ता फिर उनको बड़े जोर से तलवारों की ओर फेंकता। इससे वे तेजी से इधर-उधर हिलने लगतीं। यदि वह सभासद डर जाता या घबड़ा जाता तो सब लोग यह समझ लेते कि यह कच्चा आदमी है और जो प्रतिज्ञाऐं इसने अभी की हैं उन्हें पालन न कर सकेगा। इस कारण उसे भरती करने से इनकार कर दिया जाता।

कभी-कभी ऐसा भी होता कि एकाध डोरा टूट जाता और तलवार आदमी की पीठ पर गिर पड़ती। इससे उसको बहुत चोट लग जाती और कभी वह मर भी जाता। ऐसे अवसर पर अन्य सभासद उससे सहानुभूति दिखाने के बजाय उल्टा क्रोधित होते और कहने लगते कि इसका हृदय शुद्ध नहीं है। उनका विश्वास था कि सच्चे आदमी पर ऐसी विपत्ति नहीं आती। इसलिये इसलिये वे तुरन्त उसे बाहर निकाल देते। पर यदि वह इस तलवारों की परीक्षा में अच्छी तरह उत्तीर्ण हो जाता, तो एक भोज होता। तब "थाकू" उसका एक नया नाम रखता और सभा के कुछ गुप्त संकेत उसे बताता, जिससे आवश्यकता पड़ने पर वह सभा के कार्यों में भाग ले सके। उपर्युक्त नियम और सभासद बनाने की प्रणाली सर्वत्र एक-सी नहीं थी। विभिन्न प्रान्तों में ऐसी सभाओं के नियमों में अन्तर होना सम्भव था।

चीन में नवीन क्रांति का आरम्भ—

बाक्सर विद्रोह में चीनी शासकों की गहरी हार और बदनामी हो जाने से सनयात सेन को अपने क्रांतिकारी कार्यक्रम को आगे बढ़ाने का मौका मिला। चीनी सरकार और हाङ्गकाङ्ग के अँगरेज अधिकारी तो उनको आने नहीं देते थे, इसलिये वे जापान में बैठकर ही चीन में विद्रोह खड़ा करने की तैयारी करने लगे। उन्होने सहायता भेजकर क्वांगटन और फूकीन के समुद्री नगरों पर हमला करने की योजना बनाई। इसके अनुसार देश-भक्तों के एक बड़े दल ने उक्त नगरों पर धावा किया पर कुछ असावधानी हो जाने के कारण सफलता प्राप्त न हो सकी।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

यद्यपि विद्रोहियों की प्रथम योजना असफल हो गई, परन्तु देश में चैतन्यता की एक नवीन लहर उत्पन्न हो गई। सरकार के भी कुछ होश आया और शिक्षा प्रणाली में परिवर्तन किया गया। पेकिङ्ग में एक विश्व-विद्यालय की स्थापना की गई और चीनी विद्यार्थियों के लिये विदेशों में जाकर पढ़ने की व्यवस्था भी की गई। इस समय विद्यार्थियों में काफी उत्साह फैल गया था और कई कालेज देश-प्रेमी नवयुवकों के केन्द्र बन गये थे। सन् १९०२ में नानकिङ्ग कालेज के विद्यार्थियों ने हड़ताल की, जिसमें प्रोफेसर भी सम्मिलित थे। इनमें से जो सरकारी अधिकारियों के आदेश से निकाले गये उन्होंने अपना एक पृथक कालेज स्थापित किया, जिसका नाम "देश प्रेम करो कालेज" था।

डा० सनयात इस बीच जापान में रहकर अपना प्रभाव बढ़ा रहे थे, ताकि दूसरी बार क्रांति का उद्योग अधिक कारगर तरीके से किया जा सके। सन् १९०३ बहुत कुछ तैयारी करके वे विश्व-भ्रमण के लिये निकले, ताकि संसार के कुछ राष्ट्रों की सहानुभूति अपने कार्य के लिये प्राप्त करली जाय। सबसे पहले वे फ्रांसीसी दूतावास के निमंत्रण पर अनाम पहुँचे। वहाँ कई बड़े अफसरों से उनका परिचय हुआ और धनी चीनी व्यापारियों से मित्रता करके उनको अपने संङ्गठन का सदस्य बनाया। वहाँ से वे हवाई टापू गये, और छै मास तक चीनी जनता में क्रांति का प्रचार करते रहे। उस समय वे जहाँ कहीं जाते थे वहीं पर क्रांति के अग्रदूत की हैसियत से उनका उत्साहपूर्वक स्वागत किया जाता था। जब वे हवाई से अमरीका के लिये रवाना होने वाले थे उसी समय रूस-जापान संग्राम छिड़ गया। जिससे यात्रा करने में रुकावट पड़ गई। पर ये आने को जापानी बताकर चालाकी से अमरीका पहुँच ही गये। इनके अमरीका आने की सूचना पहले ही समाचार-पत्रों में प्रकाशित हो चुकी थी, पर ये कई सप्ताह तक जनता की नजर से छिपे रहे। कारण यह था कि उसी समय चीन के राजकुमार किसी उत्सव के उपलक्ष्य में अमरीका आये थे और चीनी व्यापारी बड़ी शान-शौकत के उनका स्वागत कर रहे थे। राजकुमार नहीं चाहते थे कि इस अवसर पर सनयात सेन उनके विरुद्ध कुछ

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कहने लगे। इसलिये जब राजकुमार अमरीका से रवाना होने को जहाज पर बैठ गये तभी अमरीकन अधिकारियों ने सनयात सेन को बाहर आने दिया।

उस समय और भी एकाध चीनी नेता विदेशों में चीन के शासन-सुधारों के सम्बन्ध में आन्दोलन कर रहे थे, पर सनयात सेन का क्रांतिवाद उनसे कहीं अधिक प्रभावशाली था। वे जहाँ कहीं जाते वहीं चीन के मचू सम्राट के विरुद्ध जोर-शोर से प्रचार करते। अमरीका स्थित चीनी राजदूत इनके आन्दोलन से घबड़ा गया और उसने सूचना प्रकाशित की कि जो कोई चीन निवासी सनयात सेन के सङ्गठन में भाग लेगा उसके घर वालों को चीन में कैद कर लिया जायगा। पर लोग इससे भी न डरे और सनयात सेन का कार्य बराबर बढ़ता रहा।

"रिवोल्यूशनरी ब्रदरहुड" की स्थापना—

इस प्रकार अमरीका और योरोप के विभिन्न देशों में अपने विचारों तथा संस्था का प्रचार करते हुये और वहाँ पर निवास करने वाले चीनियों को अपना सहायक बनाते हुये सनयात सेन १९०५ में सिंगापुर के रास्ते जापान लौटे। उस समय जापान रूस को हरा चुका था। चीन सरकार से देश निकाले की सजा पाकर चीन के हजारों नवयुवक जापान चले आरहे थे। जापान की विजय से इन चीनी देश-भक्तों को भी बड़ा प्रोत्साहन मिला। सनयात सेन ने इन लोगों को संगठित करके "रिवोल्यूशनरी ब्रदरहुड" नाम की संस्था बनाई जो पूर्ण रूप से क्रांतिकारी थी। इसने अपने चार उद्देश्य निश्चित किये थे— (१) चीन से मंचूवंश के शासन को हटाना (२) चीन को चीनियों के लिये सुरक्षित रखना (३) प्रजातंत्र स्थापित करना (४) भूमि के वितरण में समानता का भाव रखना।

इस संगठन ने कुछ समय पश्चात् चीन में क्रांतियों की धूम मचादी। सन् १९०६ में हूनन प्रान्त की सीमा पर विद्रोह हुआ। यद्यपि प्रधान कार्यालय ने इसके लिये आदेश नहीं दिया था, पर लोगों ने जोश में आकर बगावत खड़ी करदी। जब इसके लिये धन की आवश्यकता हुई तो सनयात सेन कैण्टन में

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

चन्दा लमा करने लगे। सरकार को इसका पता लग गया और सनयात सेन को नदी के रास्ते से भागना पड़ा। वे अपने दो मित्रों के साथ अनाम चले गये। यहाँ फ्रांस सरकार इनकी सहायता करने लगी। फ्रांसीसी अफसर चीनी क्रांतिकारियों का युद्ध की शिक्षा देने लगे। समिति की जापान स्थिति शाखा को हथियार भेजने का आदेश दिया गया। पर वहाँ के कार्य-कर्ताओं में आपस में फूट हो गई थी, इससे कोई उत्तर ही नहीं मिला। फिर भी सन् १९०७ और १९०८ में चीन में जगह-जगह विद्रोही युवक आक्रमण करने का प्रयत्न करते रहे। सनयात सेन के सहयोगी हुएनसींग ने युवकों में एक नारा चलाया। जिसका आशय था—"मरने के लिये साहस करो।" कुछ समय बाद फिर क्रांति का उद्योग किया। पर तब भी जापान से समय पर हथियार नहीं मिले और सरकारी सेना से मुकाबला होने पर विद्रोही पहाड़ों में जा छिपे।

पर अब क्रांति की आग अच्छी तरह भड़क उठी थी। सनयात सेन के बीस वर्ष के अनवरत उद्योग और कष्ट सहन ने चीन की करोड़ों जनता को उसका प्रशंसक और अनुयायी बना दिया था। प्रवासी चीनियों ने सदैव धन द्वारा उनकी भरपूर मदद की। सनयात सेन के प्रचार के फल-स्वरूप अधिकांश चीनी जनता के हृदय में मंचू सम्राटों के विरुद्ध घोर घृणा पैदा हो गई थी और वह हर तरह की कुर्बानी करके भी उनके सिंहासन को उलट देने का निश्चय कर चुकी थी।

सन् १९११ में हुयेनसींग ने फिर एक क्रांतिकारी सेना तैयार की जिसके सदस्यों ने देशोद्धार के लिये प्राण देने की शपथ ग्रहण की। इन्होंने कैण्टन पर हमला किया और सरकारी फौज के साथ पाँच घण्टे तक बड़ी वीरता से लड़ते रहे। उनके पास केवल पिस्तौलें और छोटे बम थे, इसलिये सरकारी सैनिकों की रायफलों से उनका काफी नुकसान हुआ। युद्ध समाप्त होने पर ४३ नव-युवक मरे पाये गये। हुयेनसींग शेष साथियों को लेकर अन्यत्र चला गया। क्रांतिकारियों ने अनेक सरकारी इमारतें नष्ट कर दीं। यह क्रांति २९ मार्च को हुई थी, इसलिये जब चीन में राष्ट्रीय प्रजातंत्र शासन की स्थापना हुई तो इस दिन को प्रतिवर्ष राष्ट्रीय छुट्टी की तरह मनाया जाने लगा। इसका

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आशय यह था कि चीनी-क्रांति का श्री गणेश सनयात सेन के सहयोगी हुयेन-सींग ने किया, यद्यपि उसके सफल होने में कुछ समय लगा और आगे चलकर उसमें तरह-तरह के परिवर्तन भी होते रहे ।

इस दृष्टि से चीन वालों के लिये यह २९ मार्च का दिन वैसा ही है जैसा हमारे यहाँ २६ जनवरी का बन गया है, जब कि सन् १९३० में कांग्रेस की तरफ से देश को स्वाधीनता की घोषणा की गई और उसके लिये सैकड़ों छोटे-बड़े नेताओं ने जेल यात्रा की । यद्यपि स्वराज्य प्राप्त करने के लिये देश को सन् १९४२ में "अंगरेजो भारत छोड़ो" आन्दोलन करना पड़ा जिसमें लाखों व्यक्तियों को अभूतपूर्व कुर्बानियां करनी पड़ीं, तो भी २६ जनवरी का महत्त्व बना ही रहा और उसे आज तक सम्पूर्ण राष्ट्र में "स्वाधीनता दिवस" के रूप में बड़े उत्साह से मनाया जाता है । महत्त्वपूर्ण अवसरों पर बाधाओं के होते हुये वचनबद्धता पालन का ऐसा ही प्रभाव होता है, चाहे उस समय वह प्रकट में सामान्य ही क्यों न जान पड़े ।

सरकार का आत्म-समर्पण--

चीन सरकार पर भी सनयात सेन के आन्दोलन का प्रभाव कम नहीं पड़ा था । यद्यपि वह उनकी गिरफ्तारी की आज्ञा देता रही, पर दूसरी ओर विवश होकर वह जनता को सन्तुष्ट करने के लिये सुधारों की घोषणा भी करने लगा थी । सन् १९०९ में विभिन्न प्रान्तों में व्यवस्थापिका सभायें बनाई गईं और १९१० में राष्ट्रीय व्यवस्थापिका सभा की पहली बैठक हो गई । इसमें निश्चय किया गया कि सन् १९१३ तक एक पूर्ण अधिकार प्राप्त पार्लीमेण्ट का संगठन कर दिया जाय । पर सनयात सेन की पार्टी इन दिखावटी बातों से सन्तुष्ट नहीं हुई । उसका आन्दोलन जारी रहा । शीघ्र ही हैंकाऊ के सरकारी गुप्त-शस्त्रागार में बम विस्फोट हुआ, जिसके लिये उसी समय प्रान्तीय शस्त्रागार से हथियार चुराते हुये आठ सैनिक पकड़े गये जिनको तुरन्त प्राणदण्ड दे दिया गया । बस यही देशव्यापी क्रांति का सिगनल था । सरकारी सेना ने क्रांति-कारियों के साथ मिलकर खुल्लम-खुल्ला विद्रोह कर दिया । वायसराय का

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

महल बम से उड़ा दिया गया और उसे राजधानी छोड़कर भागना पड़ा। दूसरे दिन शस्त्र तैयार करने वाले कारखाने पर कब्जा कर लिया गया। क्रांतिकारी कमेटी ने घोषणा-पत्र निकाला कि इसी प्रकार समस्त प्रांतों में विद्रोह करके वहाँ राष्ट्रीय शासन कायम कर देना चाहिये।

अब पेकिङ्ग की सरकार घबड़ाई और उसने सुधारवादी नेता "युआन शिकाई" को वायसराय बनाकर देश को पूर्ण वैधानिक अधिकार देने तथा अपराधियों को क्षमा प्रदान करने की घोषणा की। पर अब ऐसे वायदों का समय बीत चुका था और जनता में शासकों के प्रति रोष की भावना उमड़ रही थी। इसलिये क्रांति की लहर एक नगर से दूसरे नगर में बड़ी तेजी के साथ फैलने लगी। नानकिङ्ग में दोनों दलों में बहुत बड़ा युद्ध हुआ और शीघ्र ही वह विद्रोहियों के अधिकार में आगया। कुछ ही दिनों में १३ प्रान्त स्वतंत्र होकर विद्रोहियों से मिल गये। इस पर नाबालिग सम्राट के पिता ने, जो इस समय रीजेंट का कार्य कर रहा था अपना अधिकार त्याग युआन शिकाई को शासन का पूर्ण अधिकार दे दिया।

इधर सनयात सेन के अनुयायी देशव्यापी क्रांति करके सरकार को स्थान-स्थान पर हरा रहे थे, उधर वे स्वयं अमरीका में दौड़-धूप करके क्रांतिकारी सरकार का संचालन करने के लिये धन इकट्ठा कर रहे थे। वहीं पर उनको तार मिला कि "हैंकाऊ में क्रांति हो गई शीघ्र ही रुपया भेजिये। बूचङ्ग में बागी लोग तैयार हैं।" जब तक उन्होंने आर्थिक सहायता भेजी तब तक संसार के समाचार-पत्रों में यह सम्वाद प्रकाशित हो गया—'चीन में सनयात सेन की आज्ञा से क्रांति हो गई। विद्रोही प्रजातंत्र स्थापित कर रहे हैं जिसके प्रथम प्रेसीडेण्ट सनयात सेन होंगे।"

यह समाचार पढ़ कर सनयात सेन चुपचाप अमरीका से इङ्गलैण्ड के लिये रवाना हो गये, क्योंकि वे चीन के प्रजातंत्र शासन को इङ्गलैण्ड के नमूने पर ही बनाना चाहते थे। इङ्गलैण्ड पहुंचते ही उनको अपने देशवासियों का संदेश प्राप्त हुआ—'चीन लौट आओ, तुमको चीनी प्रजातंत्र का प्रेसीडेण्ट निर्वाचित किया गया है।" वे ११ नवम्बर १९११ को लन्दन से रवाना

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

होकर २४ दिसम्बर को शंघाई पहुँच गये । दूसरे ही दिन संसार में यह खबर फैल गई कि सनयात सेन ने नियमानुसार प्रेसीडेण्ट पद की शपथ ग्रहण करली ।

पर इस समय चीन के दो भाग हो गये थे । दक्षिण के प्रान्तों ने तो स्वाधीनता की घोषणा करके सनयात सेन को राष्ट्रपति बनाया था, जिनकी राजधानी नानकिङ्ग में थी । उधर उत्तरी चीन में अभी तक बालक सम्राट गद्दी पर बैठा था और वहाँ के बहुसंख्यक व्यक्ति तथा राजवंशीय नेतागण क्रांतिकारी पद्धति तथा साम्यवादी आन्दोलन के विरुद्ध थे । इस समय शासन का भार युआनशिकाई को मिल चुका था, जो क्रांतिकारियों से लड़ने के बजाय समझौता करके काम चलाना चाहता था । उसने तथा उसके साथियों ने यह प्रचार करना आरम्भ किया कि "सनयात सेन शासन कार्य मे अनभिज्ञ हैं, इसलिये प्रेसीडेण्ट होने के योग्य नहीं माने जा सकते । यह तो एक गरीब डाक्टर है जिसने पेट पालने के लिये किसी तरह चिकित्सा विज्ञान तथा औषधियों का सामान्य ज्ञान प्राप्त कर लिया है । वह शासन-संचालन, राजाओं, सम्राज्यों के विषय में क्या जान सकता है ?"

पर ऐसे लोग यह भूल जाते थे कि सनयात सेन वह व्यक्ति था जिसने तीस वर्ष तक देशोद्धार के लिये घोर परिश्रम तथा आत्म त्याग करके क्रांति का मार्ग तैयार किया । उसने इस कार्य में कभी किसी प्रकार का स्वार्थ भाव नहीं रखा, न कभी प्राणों का मोह किया । उसने चीन में क्रांति की भावना फैलाने के लिये जितना कष्ट सहन किया है उसका दूसरा उदाहरण मिल सकना कठिन है । ऐसे महान पुरुष जब राज्य के किसी उच्च पद के संचालक बनाये जाते हैं तो उनके लिये यह आवश्यक नहीं होता कि वे उस पद को ट्रेनिङ्ग पहले प्राप्त करें । हमारे देश का उदाहरण भी इस सम्बन्ध में आँखें खोलने वाला है । यद्यपि पं० जवाहर लाल नेहरू, सरदार पटेल, बा० राजेन्द्र प्रसाद ने कभी शासन कार्य नहीं किया था, पर जब उनको भारतवर्ष जैसे बड़े देश की बागडोर संभालनी पड़ी तो उन्होंने आरम्भ से ही वे कार्य कर दिखलाये जिससे संसार के बड़े-बड़े राजनीतिज्ञ और कूटनीतिज्ञ दंग रह गये ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

सनयात सेन का महान त्याग—

पर सनयात सेन के मार्ग में और भी कई बाधायें ऐसी थीं जिनसे चीन का शासन-संचालन कठिन था। एक तो अपने देश का दो हिस्सों में बँटा रहना ही उनको बड़ा हानिकारक और अशोभनीय जान पड़ता था, दूसरे राज्य-कार्य के लिये कोई नियत कोष (खजाना) न था। ऐसे अवसरों पर लोग प्रायः अन्य राष्ट्रों से कर्ज लेकर नाम चलाया करते हैं, पर चीन की अस्थिर और डाँवा-डोल दशा को देखकर कोई विदेशी कर्ज देने को तैयार न हुआ। इतने पर भी जब सनयात सेन ने देखा कि उन्हीं के कुछ देशवासी स्वार्थवश या अज्ञानता के कारण उनका विरोध कर रहे हैं तो उनका मन शासन-संचालन से हट गया। उन्होंने आज तक जो कुछ कार्य किया था देश सेवा के लिये परोपकार बुद्धि से किया था। स्वार्थपरायणता का उनमें लेश न था। अन्यथा वे सदा जो लाखों रुपया चन्दा आन्दोलन के लिये इकट्ठा करते रहते थे उसमें से यदि अपने लिये जमीन-जायदाद बनाकर आराम से जीवन गुजारने लग जाते तो उनसे कोई कुछ कहने वाला न था। पर उनको तो आरम्भ से ही एक ही धुन थी कि किसी प्रकार चीन को जागृत और स्वावलम्बी बनाकर संसार के अन्य प्रगतिशील देशों के समकक्ष खड़ा किया जाय। इसके लिये उन्होंने अपने समस्त सुख-सुविधाओं का ख्याल छोड़ दिया था और वर्षों तक एक देश से दूसरे देश में मारे-मारे फिरते रहे। उन्होंने अपने उद्देश्य के लिये जितना कष्ट सहन किया उतना बहुत कम राजनीतिक नेताओं ने किया होगा।

पर जब युआनशिकाई ने यह कहा कि सनयात सेन शासन-कार्य चला सकने में असमर्थ हैं और उन्हें अपने पद से स्तीफा दे देना चाहिये, तो इस कथन का प्रतिकार करने के बजाय उन्होंने युआन को तार भेजा कि "आपके लिये मैं अपना पद छोड़ने को तैयार हूँ, पर इसमें शर्त यह है कि आप राजतंत्र से सम्बन्ध त्याग कर प्रजातंत्र की शपथ लें और सम्राट पर दबाव डालें कि वह राजगद्दी छोड़ दे।"

युआन इसके उत्तर में कुछ दिन तक तो चुप्पी साधे रहा। पर जब

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उसने देखा कि चारों तरफ उपद्रव बढ़ता ही जाता है तो उसने एक तार सनयात सेन के पास भेजा कि "इन दिनों सम्राट की आज्ञानुसार मुझे शासन के पूर्ण अधिकार प्राप्त हैं, पर मैं उनको तुच्छ समझता हूं। मेरी दृष्टि में भी प्रजातंत्र ही शासन का सर्वश्रेष्ठ रूप है, जैसा कि सारा संसार मानता है। मैं राजतंत्र के अधिनायक पद से त्याग-पत्र देता हूं।"

इस पत्र को पाकर सनयात सेन को हार्दिक प्रसन्नता हुई क्योंकि उनका लक्ष्य एक-मात्र देशोन्नति ही था। उन्होंने नानकिङ्ग की शासन-सभा को अपना त्याग-पत्र भेजते हुये लिखा—"आज मैं अपना त्याग-पत्र इसलिये भेज रहा हूं कि आप लोग एक अनुभवी व्यक्ति को प्रेसीडेण्ट चुनें। चीन-सम्राट के त्याग-पत्र तथा उत्तरी और दक्षिणी चीन की एकता का श्रेय श्री युआन-शिकाई को है। उन्होंने प्रजातंत्र में अपना विश्वास प्रकट किया है, इस कारण मैं चाहता हूं कि वे ही राष्ट्रपति निर्वाचित किये जायें।"

सनयात सेन की आज्ञा को शिरोधार्य कर दूसरे दिन लोगों ने युआन को प्रेसीडेण्ट चुन लिया। पर उनका विश्वास अब भी सनयात सेन पर था। वे जानते थे कि देश को गृह-युद्ध की विभिषिका से बचाने के लिये उन्होंने यह महान त्याग किया है। इससे जनता की श्रद्धा उनके प्रति और भी बढ़ गई और उन्होंने अपने मन में समझ लिया कि चीन में अगर कोई सच्चा देश-भक्त नेता है तो वह सनयात सेन ही है।

युआन की धोखेबाजी—

पर युआन पुराने तर्ज के का दकियानूसी व्यक्ति था। वह राजनीति में किसी प्रकार की धूर्तता, असत्य, बेईमानी को बुरा नहीं समझता था। आरम्भ में तो उसने सनयात सेन का पेकिङ्ग बुलाकर उनका शाही ठाट-बाट के साथ स्वागत किया और राजमाता द्वारा उनका प्रीतिभोज दिलवाया। इस प्रीतिभोज के अगुवा वे ही राजकुमार पुलन थे, जिन्होंने अमरीका यात्रा के समय सनयात सेन को तीन साप्ताह तक सानफ्रांसिसको में ही रुकवा दिया था। जिस समय सनयात सेन ने युआन शिकाई से बातें कीं तो उनके दिमाग में सबसे बड़ी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

समस्या रेलवे मार्ग के विकास की थी। युआन ने भी इसे पसन्द किया और सनयात सेन को रेलवे-विभाग का प्रधान बना दिया।

पर युआन तो स्वभाव से ही स्वेच्छाचारी शासक थे, और अब प्रजातंत्र में उस स्वच्छन्दता पर रोक लग गई थी। प्रधान सचिव टाँग-ची से, जो साम्यवादी था, बात-बात में उनका मतभेद हुआ करता था। इससे अप्रसन्न होकर प्रधान सचिव ने स्तीफा दे दिया और युआन ने एक ऐसे व्यक्ति को सचिव बना दिया जो काम की दृष्टि से बिल्कुल निकम्मा था।

रेल-विस्तार की योजना ठीक करके सनयात सेन जापान गये जहाँ ३००० चीनी विद्यार्थियों ने उनका स्वागत किया। कुछ समय बाद उनको समाचार मिला कि युआन शिकाई की स्वच्छादता के कारण चीन में गड़बड़ी फैल रही है और ऐसेम्वली उसके कार्यों का विरोध कर रही है। याङ्गटीसी प्रांत से असंतोष फैलने के समाचार मिले और फिर बूचङ्ग नामक नगर में दङ्गा हो गया। युआन ने विपक्षी दल के तीन गवर्नरों को बरखास्त कर दिया। यह सब देखकर सनयात सेन ने युआन को तार भेजा कि "आप अपने पद को त्याग दीजिये। आपने राष्ट्र का उत्तरदायित्व पूरा करने के लिये पद ग्रहण किया था, लेकिन आपके कारण देश में असंतोष बढ़ता जाता है।"

युआन पर ऐसी सच्ची बातों का क्या प्रभाव पड़ सकता था? वह तो ऐसा राजनीतिक खिलाड़ी था जो फौरन रङ्ग बदल लेते हैं। त्याग पत्र देना तो दूर उसने सनयात सेन को रेलों का डाइरेक्टर जनरल के पद से हटा दिया और स्वयं एकतंत्र शासक बन बैठने की योजना बनाने लगा। युआन उनका विरोधी बन गया और इसलिये सनयात सेन को फिर देश से बाहर रहना पड़ा।

कौमिंगटांग का संगठन—

कौमिङ्गटाङ्ग चीन की एक पुरानी संस्था थी जो राजनीतिक कार्यों में भाग नहीं लेती थी। पर युआन के राष्ट्रपति होने पर इसके सदस्य राजनितिक कार्यों की तरफ ध्यान देने लगे। वे मुख्यत: युआन के शासन के

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

विरोधी थे। सन् १९१३ में उसने इस संस्था को गैर-कानूनी घोषित कर दिया और उसके ३०० सदस्यों को पार्लीमेंट से निकाल दिया। यह देखकर सनयात सेन ने जापान में कोमिङ्गटांग का नया सङ्गठन किया और उसे पूरी तरह क्रांतिकारी संस्था बना दिया। आगे चलकर यही कोमिङ्गटांग चीन की शासनकर्त्ता बनी और आज भी चाङ्गकाई शेक की अध्यक्षता में फारमोसा पर उसीका शासन है।

सन् १९१४ वाले योरोपियन युद्ध में योरोपियन राष्ट्र चीन को भी उसमें भाग लेने की प्रेरणा दे रहे थे। पर सनयात सेन का विचार था कि चीन को इस समय अपने घर की भीतरी हालत का सुधार करना चाहिये, युद्ध में फँसने से उसका नाश हो जायगा। इसलिये उन्होंने इङ्गलैण्ड के प्रधानमंत्री लायडजार्ज को एक पत्र लिखा कि "इङ्गलैण्ड ने मेरे जीवन की रक्षा की थी, जिसके लिये मैं कृतज्ञ हूँ। मैं अपने देश का भक्त तथा इङ्गलैण्ड का मित्र होने की हैसियत से यह कहना चाहता हूँ कि आपकी तरफ से चीन को युद्ध में शामिल कराने की जो कोशिश हो रही है, वह चीन और इङ्गलैण्ड दोनों के लिये हानिकारक सिद्ध होगी।"

सन् १९२१ में पेकिङ्ग की सरकार ने इनको निमन्त्रण भेजा पर चीन की गन्दी राजनीति से असन्तुष्ट होने के कारण ये वहाँ नहीं गये। इस पर इनके ही अनेक सदस्य इनसे असन्तुष्ट हो गये। उसी समय मौका देखकर एक विरोधी जनरल ने इनकी शासन सभा पर हमला कर दिया। ये शहर से भाग कर एक जहाज पर ५६ दिन तक छिपे रहे। उस समय एक मात्र चाङ्गकाई शेक ही, जो उस समय एक नवयुवक सैनिक अफसर था, वह उनका सहायक बना रहा।

जब रूस में क्रांति होकर लेनिन की अध्यक्षता में श्रमजीवी शासन की स्थापना हो गई तो उनका ध्यान कम्यूनिज्म की तरफ गया और उन्होंने चीन को उसी मार्ग पर चलाने का निश्चय किया। पर राजनीतिक संघर्षों से वे ऊब गये थे और चीन की दलबन्दी से भी काम करने में बड़ी कठिनाइयाँ जान पड़ती थीं। इसलिये वे मुख्य रूप से लिखकर अपना प्रचार-कार्य करने लगे।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

चीन में प्रजातन्त्र की असफलता पर उन्होंने लिखा—"प्रथम क्रांतिकारी लहर ने जब चीन को व्याप्त कर दिया था तब मेरे मन में कैसी हलचल मची थी, कितनी खुशी हुई थी ? पर जब क्रांति हो जाने पर मैंने देश को वैधानिक विकास की तरफ ले जाना चाहा तो मेरे मित्रों ने कहा—"कार्य करना कठिन होता है और कहना सरल।" "लोगों की ऐसी मनोवृत्ति के कारण अभी तक चीन के पुनर्संगठन का कार्य कुछ भी आगे नहीं बढ़ सका है। इससे मेरे मनोभाव कुचल गये हैं, मेरी दृढ़ इच्छा शक्ति का हनन हो गया है।"

सन् १९२३ में रूस का एक विशेष राजनीतिज्ञ "राडोल्फ जोफे" चीन आया। सनयात सेन के साथ उसकी बहुत बात-चीत हुई और अन्त में दोनों इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि "चीन में अभी बोलशेविक ढङ्ग का संगठन सफल नहीं हो सकता, क्योंकि वह अभी साम्यवाद के लिये तैयार नहीं हो सका है। उसकी पहली समस्या एकता तथा पूर्ण स्वतंत्रता की है।" जोफे ने सनयात सेन को विश्वास दिलाया कि रूस की चीन के प्रति हार्दिक सहानुभूति है और वह रूस की सहायता पर विश्वास कर सकता है।

इन्हीं दिनों हाङ्गकाङ्ग विश्व-विद्यालय के विद्यार्थियों के सम्मुख भाषण करते हुये उन्होंने कहा—"ब्रिटिश और अमरीकन जाति बड़ी चालाक होती है। परन्तु इन देशों में भी सामाजिक क्रांति की लहर फैली हुई है। सामाजिक क्रांति के लिये राजनैतिक क्रांति से अधिक त्याग की आवश्यकता है। समाजवाद, लोकतन्त्र तथा राष्ट्रीयता के अनुसार कार्य करने का समय आगया है। इन्हीं सिद्धान्तों को कार्य रूप में परिणित करने से जनता की उन्नति होगी। परन्तु इसके लिये जब बहुत अधिक त्याग किया जायगा तभी सफलता मिल सकेगी।"

सनयात सेन अब साठ वर्ष के लगभग हो चुके थे। यह आयु बहुत अधिक न थी, पर जीवन भर कठिन संघर्ष तथा अनेक प्रकार के कष्ट सहन करने के कारण अब उनके शरीर में थकावट आ गई थी और उत्साह भी क्षीण पड़ता जाता था। पर उस हालत में भी उन्होंने अपनी सेना का संगठन रूस के आदर्श पर किया और चांगकाई शेक को सैनिक शिक्षा प्राप्त करने के लिये

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

 www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

रूस भेजा। जब वे वहाँ से वापस आये तो उनके साथ कुछ रूसी अफसर भी थे। ली-यांग के नेतृत्व में मजदूर और किसान संघों का सङ्गठन भी होने लगा।

सन् १९२४ में राष्ट्रवादियों ने पेकिङ्ग सरकार की नीति से असन्तुष्ट होकर बालक सम्राट को उसके पद से हटा दिया और सम्पूर्ण चीन को एक संगठन में लाने की बात-चीत होने लगीं। सनयात सेन को भी इसमें बुलाया गया। वहाँ पर उनको नई सरकार के पुनर्सङ्गठन की समस्याओं पर विचार करने में इतना परिश्रम करना पड़ा कि वे बीमार पड़ गये। तुरन्त ही उनको चीन के सर्वश्रेष्ठ अस्पताल "यूनियन मेडिकल कालेज" में भेज दिया गया। उनका आपरेशन करने पर मालूम हुआ कि जिगर में ज़हरीला फोड़ा हो गया है। डाक्टर ने उनके मित्रों को सूचित कर दिया यह अच्छा नहीं हो सकता और सनयात सेन अधिक दिन जीवित न रह सकेंगे। अस्पताल में उनकी स्त्री, पुत्र तथा पुत्री ने यथाशक्ति सेवा की। मरते समय उन्होंने सबसे विदा लेकर यह आशा व्यक्त की कि "भविष्य में सोवियत संघ और चीनी प्रजातन्त्र मिलकर संसार के दलित वर्ग का उद्धार करेंगे।"

सनयात सेन की मृत्यु के पश्चात् उनके उत्तराधिकारी चांगकाई शेक का प्रभाव निरन्तर चीन के राजनीतिक क्षेत्र में बढ़ता गया और कुछ ही समय बाद वह समस्त चीन का एकमात्र शासक बन गया। यद्यपि समय की गति को देखकर उसने अपने सम्बन्ध रूस की अपेक्षा अमरीका से अधिक सुदृढ़ बनाये और उसकी सहायता से अपनी सैनिक शक्ति की निरन्तर वृद्धि करता रहा। वह युग रूस और अमरीका की प्रतियोगता का था और दोनों ही अपने प्रभाव क्षेत्र को बढ़ाने की चेष्टा कर रहे थे। चांगकाई शेक की पत्नी भी अमरीका में शिक्षा प्राप्त कर चुकी थी और राजनीतिक क्षेत्र में उसका दबदबा था। इस कारण चीन का शासन नाम मात्र लिये सनयात सेन द्वारा स्थापित 'कुमिंगटांग" संस्था के अन्तर्गत रहते हुये भी अपने संस्थापनकर्ता के आदर्शों से बहुत दूर चला गया था।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

दूसरे महायुद्ध के आरम्भ होते ही जापान ने चीन पर आक्रमण किया। यद्यपि चाँगकाईशेक ने उसका मुकाबला बड़े साहस से किया और अमरीका ने भी उसकी अच्छी तरह मदद की, पर जापान की तूफानी चाल के आगे उसे बिल्कुल पीछे हट जाना पड़ा और सन् १९४१-४२ में चीन पर जापानी शासन होगया। पर जब जर्मनी के हार जाने से अमरीका और इङ्गलैण्ड का पलड़ा भारी हो गया तो जापान को लाचार होकर चीन खाली कर देना पड़ा। दो-चार वर्ष तक उसकी स्थिति डाँवाडोल रही, पर फिर मंगोलिया के साम्यवादी दल ने, जिनका नेता माओत्सेतुङ्ग था, चांगकाई शेक को हटाकर चीन पर अपना अधिपत्य जमा लिया।

सनयात सेन न तो धनी थे और न अधिक विद्वान्। इस दृष्टि से उनकी तुलना गाँधी जी से की जा सकती है। पर उनमें निःस्वार्थता और देश-भक्ति का गुण चरम सीमा पर पहुँच गया था। उन्होंने अनेक आन्दोलनों को सफल बनाया, पर स्वयं पद लेने की इच्छा कभी नहीं की। जब लोगों ने ही कोई दूसरा सुयोग्य व्यक्ति न देखकर कार्य भार उनके कंधों पर डाल दिया तभी उन्होंने कोई पद स्वीकार किया। यदि हम अपने मौजूदा पद-लोलुप नेताओं से उनकी तुलना करें तो जमीन आसमान का अन्तर जान पड़ता है। वास्तव में सच्चे देश और समाज सेवक में अलोलुपता का गुण होना परमावश्यक है, अन्यथा स्वार्थपरता का भाव सब करे-धरे पर पानी फेर देता है।

भारतवर्ष में इस समय राजनीतिक स्वराज मिल जाने पर भी सामाजिक सुधारों की समस्या बड़ी कठिन सिद्ध हो रही है। यह कार्य मौजूदा पद लोलुप और कमाई करने वाले राजनीतिक नेताओं से नहीं हो सकता। इस उद्देश्य की पूर्ति वे ही कर सकते हैं जिन्होंने धर्मनीति और अध्यात्म को अपने जीवन का लक्ष्य बना लिया है। यदि हमारे यहाँ के नेता और कार्य-कर्ता डा० सनयात सेन के जीवन से शिक्षा ग्रहण करके निःस्वार्थ भाव से देश सेवा करने लगें तो जनता का बड़ा कल्याण हो सकता है।

मुद्रक—युग निर्माण प्रेस गायत्री तपोभूमि मथुरा,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उत्कृष्ट व्यक्तियों के जीवन-वृत्तान्त जन मानस में मानवीय आदर्शवादिता के लिये आस्था उत्पन्न करते हैं। कहना न होगा कि यह निष्ठा ही लोक-मंगल का मूल आधार है। इसलिये आदर्शवादी व्यक्तियों की जीवन कथाओं की अधिकाधिक जानकारी जनकल्याण की दृष्टि से अतीव उपयोगी एवं आवश्यक मानी जाती है।

युग-निर्माण योजना द्वारा विचार-क्रान्ति के लिये जिस अभिनव साहित्य का निर्माण किया जा रहा है उसमें महामानवों के जीवन चरित्रों की सीरीज को महत्त्वपूर्ण स्थान दिया गया है। प्रस्तुत पुस्तक उन्हीं में से एक है। ऐसे-ऐसे अनेक जीवन चरित्र छापे जा रहे हैं। हर महीने उनकी संख्या बढ़ जाती है। उनकी जानकारी पत्र लिख कर प्राप्त की जा सकती है। सभी जीवन चरित्र इसी पुस्तक की भाँति ३२ पृष्ठों में हैं। उनका मूल्य ४० पैसा है।

मानवीय आदर्शों के प्रति आस्था रखने वाले प्रत्येक विचारशील व्यक्ति से आशा की जाती है कि वे इस साहित्य को स्वयं पढ़ें और अपने परिवार तथा साथियों को इसे पढ़ावें, सुनावें।

प्रकाशक—'युग-निर्माण योजना' मथुरा।

मूल्य ४० पै०

मूल्य—पचास पैसे

: युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य- संक्षिप्त परिचय :



ज्यादा जानकारी यहाँ से प्राप्त करें :
http://hindi.awgp.org/about_us

- **विचारक्रान्ति अभियान के प्रणेता :** विचारों को परिस्कृत और ऊँचा उथाने मे समर्थ 3000 से भी अधिक पुस्तकों के लेखन के माध्यम से विश्वव्यापी विचार क्रान्ति अभियान की शरुआत की ।
- **वेद, पुराण, उपनिषद के प्रसिद्ध भाष्यकार :** जिन्हों ने चारों वेद, 108 उपनिषद, षड दर्शन, 20 स्मृतियाँ एवं 18 पुराणों का युगानुकूल भाष्य किया, साथ ही 19 वाँ प्रज्ञा पुराण की रचना भी की ।
- **3000 से अधिक पुस्तकों के लेखक :** मनुष्य को देवता समान, घर-परिवार को स्वर्ग, समाज को सभ्य और समग्र विश्वराष्ट्र को श्रेष्ठ बनाने मे समर्थ हजारों पुस्तकें लिखकर समयानुकूल समर्थ मार्गदर्शन प्रदान किया ।

- **युग-निर्माण योजना के सूत्रधार :** जिन्होंने शतसूत्री युग निर्माण योजना बनाकर नये युग की आधार शिला रखी ।
- **वैज्ञानिक-अध्यात्मवाद के प्रणेता** : जिन्हों ने धर्म और विज्ञान के समन्वय की प्रथम प्रयोगशाला 'ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान' स्थापित कर सिद्ध किया कि "धर्म और विज्ञान विरोधी नहीं, पुरक है "।
- **'२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' के उद्दघोषक** : जिन्हों ने '२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' का नारा दिया तथा युग विभीषिकाओं से भयग्रस्त मनुष्यता को नये युग के आगमन का संदेश दिया ।
- **स्वतंत्रता संग्राम के कर्मठ सैनानी** : जिन्हों ने महात्मा गाँधी, मदन मोहन मालवीय, गुरुवर रविन्द्रनाथ टैगोर के साथ राष्ट्र की स्वाधीनता के लिए संघर्ष किया एवं स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी "श्रीराम मत्त" के रुप में प्रख्यात हुए ।
- **गायत्री के सिद्ध साधक** : जिन्हों ने गायत्री और यज्ञ को रुढियों और पाखण्ड से मुक्त कर जन-जन की उपासना का आधार तथा सद्‌बुद्धि एवं सतकर्म जागरण का माध्यम बनाया ।
- **तपस्वी** : जिन्होंने गायत्री की कठोरतम साधना कर २४-२४ लाख के २४ महापुरश्चरण २४ वर्षो में सम्पन्न किया । प्रकृति प्रकोप को शांत कर अनिष्टों को टाला, सृजन सम्भावनाओं को साकार किया ।
- **अखिल विश्व गायत्री परिवार के जनक** : जिन्हों ने अपने जीवनकाल में ही अपने साथ करोडों लोगों को आत्मियता के सूत्र में बाँधकर विश्व व्यापी 'युग निर्माण परिवार' - 'गायत्री परिवार' का गठन किया ।
- **समाज सुधारक** : जिन्हों ने नारी जागरण, व्यसन मुक्ति, आदर्श विवाह, जाति-पाँति प्रथा तथा परंपरागत रुढियों की समाप्ति हेतु अद्‌भूत प्रयास किए एवं एक आदर्श स्वरुप समाज में प्रस्तुत किया ।
- **ऋषि परम्परा के उद्धारक** : जिन्हों ने इस युग में महान ऋषियों की महान परंपराओं की पुनर्स्थापना की । लुप्तप्राय संस्कार परंपरा को पुनर्जीवित कर जन-जन को अवगत कराया ।
- **अवतारी चेतना** : जिन्होंने "धरती पर स्वर्ग के अवतरण और मनुष्य में देवत्व के जागरण" की अवतारी घोषणा को अपना जीवन लक्ष्य बनाया और चेतना का ऐसा प्रवाह चलाया कि करोंडों व्यक्ति उस ओर चल पड़े ।

गायत्री परिवार जीवन जीने कि कला के, संस्कृति के आदर्श सिद्धांतों के आधार पर परिवार,समाज,राष्ट्र युग निर्माण करने वाले व्यक्तियों का संघ है। **वसुधैवकुटुम्बकम्** की मान्यता के आदर्श का अनुकरण करते हुये हमारी प्राचीन ऋषि परम्परा का विस्तार करने वाला समूह है गायत्री परिवार। एक संत, सुधारक, लेखक, दार्शनिक, आध्यात्मिक मार्गदर्शक और दूरदर्शी युगऋषि पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी द्वारा स्थापित यह मिशन युग के परिवर्तन के लिए एक जन आंदोलन के रूप में उभरा है।

Free Download Complete Work Of Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya, Founder of All World Gayatri Pariwar Books, Magazines, Articles, Stories, Poems, Great Personalities and many more at
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org